

## ब्राहिमाम, दुहाई हो....

आनंद कुमार

पछियारी टोले से मदना छौरा बकरियों को लिए सरेह(वन) की ओर निकला है, उधर फल्गूआ भैंस चराने भउजाई वाले मोबाईल पर रात दिया बुता के पिया..... फूल वाल्यूम में बजाकर झूमता हुआ निकला है, चेथरु महतो भी मेहरारू से लड़ झगड़ के 70 ₹ लेकर निरहूआ का फिलिम शंकर सिनेमा हॉल में देखने सीतामढ़ी निकले हैं, जीतन जादो तो आज ही बरसात से बचने के लिए मरई संवार रहे हैं।

जेठ की अलसायी दुपहरी, पुरवईया हवा पछिया के साथ संघर्ष करती हुई मालदह, कृष्णभोग और बमई आम-महूआ की मादक गंध लिए चहूंओर विचर रही है, कोयल की कर्णप्रिय कूक तो सबको लुभा रही, गणेश पौरंगा से पांव रंगती हुई सुमित्रा चाची भी कोयल की कूक के साथ अपनी तान छेड़ रखी हैं. कोयल के उधर से कोयल की कूक के प्रत्युतर में चाची भी कू बोलकर कोयल को चिढ़ा रही हैं।

सूर्यदेव का भीषण रूप असहनीय हैं, लग रहा हैं की पृथ्वी पर आज खुद आकर नाभिकीय संलयन करेंगे. गरमी देख के चाची सुरुज देव से बतिया भी रही - “कभी कभी काहेला सनक जात बारन तू ऐ सुरुज देव, अंगना में से दुहारी पर आते-आते तरवा (पैर) हमर जर के राख हो गेल, उफर परो ई गरमी के, अंगे-अंग घमौरी पीट दिहलस से अलग, टीविया में प्रचार देख के चौक दुकान पर से उ नाईसिलिया पाउडर मंगवले रहली उ भी बेअसर हैं” ।

साईकिल से सरजू बाबा गुजरे हैं और चाची के सुरुज देव के साथ वार्तालाप पर हस्तक्षेप किये हैं कि भउजी काहे ला सुरुज देव को गरियाते हैं, बारिश का मंत्रालय तो इंद्रदेव के पास हैं, उनके मनाईए वहीं लाएंगे पानी, पूरा सरेह पानी के लिए मुंह बाए खड़ा हैं, सूर्यदेव अलगे आग उगिल रहे हैं. अब पृथ्वी का विनाश निकट हैं, पूरे विश्व में पेड़ पौधा सब काट-काट के बिल्डिंग बना दिया, इंडस्ट्री लगा दिया, दिल्ली में केतना प्रदूषण हैं टीवी में न देखे हैं भउजी. अब पृथ्वी गरमा गया हैं तो शांत करने के लिए अब पूरे विश्व के नेतवन सब सम्मेलन पर सम्मेलन बुला रहा। पहले कितना बढ़िया सब मौसम समय पर आता था, पर अब पछताए का होत जब चिड़िया चुग गई खेत, परसो पड़ोस गांव में बारिश हुआ, 4 दिन से नेपाल में बरस रहा, लेकिन अपने यहां कहां, पिछला महीना केतना जम के पत्थर गिरा था, पूरे

सरेह के गेहूं बर्बाद. कभी सुरुज देव आग उगिलते है तो कभी शेषनाग फन हिला के भूकंप करवा देते है, अब धरती मईया का विनाश निश्चित है, केतना पापियन सब बढ़ गया है अब भुगतो, और तो और गीता में भी कहा गया है,

“यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिः भवति भारत, अभि-उत्थानम्अधर्मस्य तदात्मानं सृजामि अहम्।  
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुस्-कृताम्, धर्म संस्थापनाएं-अर्थाय संभवामि युगे-युगे।

मतलब भगवान तो अब पक्का आएंगे और कल्कि अवतार लेना अभी बाकी है। इतना बोलकर सरजू बाबा साईकिल उधियाते हुए बाजार निकल गए।

सुमित्रा चाची भी बोल पड़ी आग लागो इनर देव (इंद्रदेव) के भी।

शायद मिनिस्ट्री ऑफ रेन अफेयर्स के प्रमुख इंद्रदेव जी को सुमित्रा चाची की बात भकभका के लग गयी, अगले कुछ घंटों में Southern नेपाल सहित पूरे उत्तर बिहार में निम्न वायुदाब का क्षेत्र बना, बंगाल की खाड़ी से तूफान उठा बादलों को धकियाता, ठेलता हुआ हिमालय से टकड़ा दिया गया, शाम तक चारो ओर काले-काले बादल मंडराने लगे, सभी दिशाएं मौन-स्तब्ध, हवाओं ने भी भैरव नृत्य करना शुरू कर दिया, बांसवन में बांस झूलता, मचमचाता, गोंगियाता हुआ, पूरे सरेह में वनदेवी अट्टहास करती हुई गुजर रही, नीलगायों का झुंड भागता हुआ।

अगले तीन दिनों तक जम के बारिश हुई, लोग घरों में बंधक बन गए, नदी, खेत, खलिहान सबके तन-मन को इस बारिश ने भिगोया, सूख रही फसलों को नवजीवन मिला. लेकिन नेपाल से निकलने वाली नदियां गुर्राहट करती हुई, गंडक, बूढ़ी गंडक, बागमती, कोसी अपने पूरे रंग में लौट आई है भुजाएं फैलाए नदियां अट्टहास करती नाचती हुई प्रलय के लिए आगे बढ़ रही है।

भविष्य से अनजान, उधर फल्गूआ भैंस चराने गया है, कल्लूआ फिर फूल वाल्यूम में गाना सुन रहा है. नदी के किनारे खेत तमनी कर रहे जगेसर सहनी को प्यास लगी है, वो नदी की ओर गए है, नदी में पानी पी रहे भैंसिया, गईया भी आने वाली बाढ़ तबाही को सूंघ कर आतंकित हो रही है, नीलगायों का झुंड भी भाग रहा है, जीवन के 60 बसंत देखचुके जगेसर सहनी अपने अनुभवी हाथों से ही पहाड़ी कनकन ठंडा गेरुआ पानी छूते ही, चिचियाते हुए भागा है, बाढ़.....बाढ़..... बाढ़..... नदी किनारा छोड़, भाग रे मदना छौरा,भाग... नदी की ओर से भागते हुए गांव की ओर आया है, कर्कराहट बिजली के बीच क्रुद्ध गुर्राहट के साथ बागमती गोंगियाती हुई लोगों के निकट आ रही है, उत्तरवारी और पछियारी टोले के भयातुर लोगों ने कंठों से चींखना शुरू किया है

– बा....बा...बाढ़ , दाहड़ अलउ रे दाहड़ अलउ ह रे, बाप रे बाप..... लोगों ने भागना शुरू किया, पूरा गांव सुरक्षित स्थानों की ओर जाना चाह रहा है, खेत में काम कर रहे लोग भाग-भागकर घर आ रहे है,

हलवाहा बैल, हेंगा, रस्सी लेकर भाग रहा है. सूर्यदेव भी 3 बजे दिन में ही डूब रहे हैं, चारो ओर अंधकार. पानी बढ़ना शुरू हुआ, हर घर में कमर भर पानी।

जटेसर बाबा, बिरेंद्र बाबू तो अपने हिसाब से आकलन कर रहे हैं, देखिए न तो नहिए बारिश और अचानक से इतना हुआ कि प्रलय, 8 दिन पहिले तक गर्मी से परेशान थे और ई सरवा बंगमतिया का बंधवा टूट गया का हो जटेसर बाबा, नएका रोड भी बह गया है, हां बिरेंद्र सुरक्षित स्थान पर निकलो प्रलय है प्रलय।

लोग एक दूसरे की मदद भी कर रहे हैं, बांस-बल्ली, केला थम बांधकर लोगों सुरक्षित स्थान पर लाने का प्रयास कर रहे हैं. निचले इलाकों में जिनका घर है वो भी कमर भर पानी में रहने को मजबूर हैं, चूल्ही-चउका सब डूब चुका है, अनाज पहले ही बह चुका है, पानी बढ़ता जा रहा है। रमेसरा करुण वंदन शुरू किया है, पूरे परिवार ने बागमती नदी का वंदन करना शुरू किया है, दुहाई हो बागमती मईया..... दुहाई हो इनरदेव (इंद्रदेव)

लेकिन बागमती मईया पूरे राँ में दिखती हुई.... अट्टहास करती, क्रुद्ध हुई हाहाकार मचाती गुजर रही है.... वंदन...का कोई असर नहीं बस प्रलय है. लोग फिर भी हिम्मत नहीं हार रहे हैं, बांस बल्ली से ही सही, नाव बनाकर सुरक्षित स्थान पर जाना चाह रहे हैं. बकरी भी दह गया, मंगरूआ का बाछी..दह रहा है, पकर रे परमेशरा...बछड़ा लेके छप्पर पर चहड़ जो...मंगरूआ की मेहरारू भी दहा रही है...परमेशरा झट से बछड़ा छोड़ के मेहरारू को पकड़ा है, धामिन, ढोड़वा, गेहूँहन सांप अलग से बउआ रहा है, गेहूँअन हउ गे मईया, टोकटाक न कर जाएदे, अपने भाग जतई, मंगरूआ के माई, सांप देखते चिचियाई है दी दी गे, दीदी..माई गे माई... लेकिन पानी का बहाव इतना तेज है कि सांप भी बहकर दूसरी ओर चला गया है, सांप के गुजरने के बाद एक-एककर पूरा परिवार भागकर उंचे स्थान सरकारी स्कूल में पहुंचा है, बांस के खूटा गाड़ कर तिरपाल टांग के तंबू लगा है, पचासियो परिवार भागकर तंबू में शरण लिए हैं. दर्जनों मवेशी तो बह गया, बारिश रुकने का नाम न ले रही. त्राहिमाम दुहाई हो इनरदेव,..दुहाई हो बरहम बाबा..दुहाई हो देवता पीतर.....अब बस.

---

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें

